तौबा-तौबा करता चल, अपना जाम भी भरता चल

आज शराब का सेवन घटता-बढ़ता आम प्रचलन सा हो गया है। महानगरों में तो इसका सेवन शान-ओ-शौकत की बात समझी जाती है। फैशन तो इसका चल ही पड़ा है। पश्चिमी सभ्यता में तो यह रोजमर्रा का ढर्रा है। खुशी हो, त्योहार हो, पार्टी लेने-देने की बात हो, शराब अनिवार्य हो गई है। भारत भी उसी रास्ते पर चल पड़ा है। ऐसे में कर्नाटक के मैंगलोर नामक बड़े नगर में एक घटना घटी। समीपस्त एक बड़े विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं पब में जमा थे और पी रहे थे। एक तो छात्रों की पीने की बात गले नहीं उतरती और दूसरे कॉलेज की छात्राएं और छात्र दोनों साथ साथ पी रहे हों, तो वह कुछ लोगों के विरोध का कारण बन जाता है।

शराबबंदी के बारे में भारत सरकार और समाज की नीति को एक शायर के इन शब्दों में भी कहा जा सकता है-'तौबा-तौबा करता चल, अल्लाह-अल्लाह करता चल, खाली जाम भी भरता चल, अपना काम भी करता चल' इसलिए हम देखते हैं कि हर साल नशाबंदी के दिवस पर सभी सरकारें बड़े-बड़े विज्ञापन देती हैं और नशाबंदी का पक्ष पोषण करती हैं। पारिवारिक कलह, आर्थिक बदहाली, समाज में शराबी होने का कलंक, नशेड़ी के बाल बच्चों को भी स्कूल और पड़ोस में नफरत और हिकारत झेलने की मजबूरी, शराबियों के हाथों बीवियों की प्रताड़ना जैसी बहुत सी बातें जुड़ी हुई है। और विज्ञापन ने बहुत बार विस्तार से उल्लेख भी किया जाता है। शराबबंदी दिवस मनाने में सरकार कभी चूकती नहीं। और दूसरी तरफ हर मुहल्ले में शराब की दुकान के लाइसेंस और ठेके देने में भी नहीं चूकती। भले ही अस्पताल या चिकित्सा केन्द्र कहीं न खुले हों लेकिन ऐसा हो नहीं सकता कि शराब के ठेके के बिना कोई मुहल्ला होता हो।

बड़ी-बड़ी कतार लगने का रिवाज बहुत कम हो गया है। लेकिन कोई जाकर शराब की दुकान की लाइन देखे, लम्बी लाइनें लगी रहती हैं। बाकी किसी आपूर्ति के मामले में कोताही हो जाए लेकिन सरकार शराब की दुकानो के मामले में कोताही नहीं होने देती। १९५०-६० के दशक में मुहल्ले-मुहल्ले में शराबबंदी समितियां बनी हुई थी। शराब रोकने की थोड़ी बहुत सामाजिक कोशिश भी होती थी। गांव हो शहर, आज तो शराब का प्रचार प्रसार आसमान छू रहा है।

विवाह में शराब पीकर नाचने का प्रचलन ही चल पड़ा है। पार्टियों में जाम न छलके, ऐसा प्रायः नहीं होता। सरकार की तिजोरियां राजस्व की वसूली से भरती जाती हैं और यह हर साल बढ़ती है। आबकारी का यह राजस्व सरकार की आमदनी का बहुत बड़ा जरिया है। ऐसे में सरकार भला क्यों शराबबंदी पर जोर देगी? कुछ धार्मिक स्थलों, तीर्थों में शराबबंदी लागू है। लेकिन शायद ही कोई तीर्थ या धार्मिक स्थल हो, जहां शराब की वैकल्पिक आपूति की व्यवस्था न हो। साल के कुछ दिन सरकारी तौर पर ड्राई डे होता है। उस दिन शराब बाजार में नहीं बिकती। लेकिन ड्राई डे के दिन लोग अपनी व्यवस्था कर के रखते हैं। आखिर यह मिल जाती है आगे से नहीं तो पीछे से, पीछे से नहीं तो आगे से निर्धारित जगह से।

सरकार की सक्रिय नीति रही है कि बाकी विकल्पों को छोड़कर शराब को हर तरीके से प्रोत्साहित किया जाए। भारत में भांग एक विकल्प समझा जाता था। इसे शंकर की बूटी कहा जाता था। आज भी शिवरात्रि के दिन सैकड़ों गांवों में कहीं कहीं मंदिर में दूध में भांग मिलाकर तरल पेय बनाने और घर घर बांटने की परम्परा चलती है। राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल में भांग को ड्रग की श्रेणी में डाल दिया गया। डालने के पहले इसका पूरा परीक्षण हुआ। हालांकि परीक्षण में यह स्वास्थ्य की दृष्टि से निरापद पाया गया। कुछ छुटपुट विरोध भी हुआ मगर कोई नतीजा नहीं निकला। लेकिन भांग का प्रयोग बदस्तूर जारी रहा। भंगेड़ी, गंजेड़ी और शराबी आदि शब्दों का प्रयोग भी हिकारत के साथ चलता रहा। इसके बावजूद शराब पीने को आज जो मान्यता मिली है वह आश्चर्यजनक है। फैशन और जीवनशैली में शुमार हो गया है। अलबत्ता गुजरात जैसे राज्य में कुछ कम है। क्योंकि वहां नशाबंदी है। डॉक्टर की सलाह पर और पर्यटकों के नाम होटलों में शराब उपलब्ध है। मैं एक बार पत्रकार मित्रों के साथ गुजरात गया था। वहां दो-

तीन मित्रों को तलब हुई और वह होटल के प्रबंधन से शराब लेने गए। लेकिन मैंने देखा क्या, कि कोई दस मिनट में ही लौट आए। बात ये थी कि उन रौबदार पत्रकारों से शराब के लिए फार्म भरने को कहा गया। फार्म था- नशेड़ी का नाम, नशेड़ी के बाप का नाम, ऐसी ही और भी दूसरी जानकारियां उस फार्म में मांगी गई थी। उन्हें लगता था कि फार्म के बहाने गुजरात ने उनके साथ अपमान का बर्ताव किया है। उन्होंने अपनी तरह से इसका इंतजाम किया और जुट गए।

आज शराब का सेवन घटता-बढ़ता आम प्रचलन सा हो गया है। महानगरों में तो इसका सेवन शान-ओ-शौकत की बात समझी जाती है। फैशन तो इसका चल ही पड़ा है। पश्चिमी सभ्यता में तो यह रोजमर्रा का ढर्रा है। खुशी हो, त्योहार हो, पार्टी लेने-देने की बात हो, शराब अनिवार्य हो गई है। भारत भी उसी रास्ते पर चल पड़ा है। ऐसे में कर्नाटक के मैंगलोर नामक बड़े नगर में एक घटना घटी। समीपस्त एक बड़े विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं पब में जमा थे और पी रहे थे। एक तो छात्रों की पीने की बात गले नहीं उतरती और दूसरे कॉलेज की छात्राएं और छात्र दोनों साथ साथ पी रहे हों, तो वह कुछ लोगों के विरोध का कारण बन जाता है। वैसे भी महिलाओं के और वह भी सार्वजनिक स्थलों पर साथ साथ जाम ढालने को भारत के आम समाज में स्वीकार नहीं किया जाता। कुछ लड़कों ने निशाना साध कर लड़कों की पिटाई कर दी जो लड़कियां लड़कों के पक्ष में खड़ी हुईं थोड़ी बहुत खरोंच उन्हें भी आई। मेरी यादाश्त में ऐसी सैकड़ों घटनाएं हैं जब गांव मुहल्ले के करीब शराब का ठेका खुलने के खिलाफ ग्रामीण महिलाएं संगठित होकर धराना प्रदर्शन पर उतर आतीं और पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर पाते। ये महिलाएं उग्र होकर तोड़फोड़ भी करती थीं। कोई खोजे तो कई राज्यों के इस तरह के सैकड़ों कतरने मिल जाएंगी। लेकिन अब ऐसा कम हो रहा है। धार्मिक स्थलों, स्कूलों के आसपास भी शराब के विक्रय पर विरोध होता भी है पर वैसा उग्र नहीं।

मैंग्लोर के इस पब पर हुए हमले को रातों रात अन्तर्राट्रीय स्तर का विवाद बना दिया गया। क्योंकि जिन युवकों ने यह मारपीट की थीं, वह श्रीराम सेना के थे। कर्नाटक में भाजपा की सरकार है। और श्रीराम सेना कहने से इतना तो बोध होता ही है कि यह हिन्दू संगठन है। राजनीति वाले इसे ले उड़े। और हिन्दू कट्टरपंथियों के मत्थे इसका इलजाम मढ़ दिया। रेड़ियो, टेलीविजन, अखबार के लिए यह चटकारा लेने लायक मसाला बना दिया गया। राष्ट्रीय स्तर के राजनेता कूद पड़े क्योंकि इस डंडे से भाजपा को मारा जा सकता था। केन्द्रीय मंत्री रेणुका चौधरी, कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी, गिरिजा व्यास, वीरप्पा मोइली जैसे नामी-गिरामी नेता सीधे इस घटना को भाजपा से जोड़कर चुनावी हमला बोल दिया। अखबारों में आधे-आधे पेज के समाचार आए। दो-चार शॉट जो मिल गए थे चैनलों ने उसको बार बार दिखाकर अभियान चलाया। और एक-दो दिन में घटना तिल का ताड़ बन गई। इस्लामी समाजों में ईश निन्दा बहुत बड़ा अपराध है। मृत्युदण्ड का प्रावधान है इसके लिए। यहां तो शराब निन्दा इससे बड़ा अपराध बन गया। कांग्रेस के एक नेता ने इसके कर्नाटक का तालिबानीकरण कहा। दकियानूसी लिखने वाले लोग तो बहुत से थे।

असल में पश्चिम का सांस्कृतिक आक्रमण का वेगवान प्रवाह चल रहा है। विश्वविद्यालय के छात्रों के करीब पड़ने वाला यह पब अकेला ऐसा पब नहीं है। अब तो पब कल्चर ही चल पड़ा है। बहुत कम लोग जानते होंगे कि इस पब से बहुत करीब ग्रामीण संसार है। वहां इस पब के खिलाफ जबरदस्त वातावरण है। एक तो पब इतने करीब हो तो शराब का प्रचलन बढ़ेगा। ग्रामीणों में यह धारणा है और वह नहीं चाहते कि उनके बच्चे वहां जाएं और लड़कियों के साथ शराब सेवन करेंग यह तो उन्हें कतई गवारा नहीं। इस घटना को लेकर सिर्फ राजनेता ही मीडिया मैदान में उतरे हों, ऐसा नहीं, उन्हें एक महिला संगठनों ने भी झंडा बुलंद किया। हम कहां जाते हैं, क्या करते हैं, क्या खाते-पीते हैं, यह हमारे अधिकार की बात है। इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

अति स्वतंत्रता की इस अवधारणा की वकालत करने वाले लोग बहुत हैं। नारी मुक्ति से लेकर मानवाधिकार संगठन तक। लेकिन मूल में राजनीति है। थोड़ी देर के लिए यह मान लिया जाए कि यह श्रीराम सेना की बजाए भीमसेना होती तो क्या यह विरोध होता? हरगिज नहीं। रामसेना के नाम से राजनीति करने वाले लोगों को थोड़ी सुविधा हो गई। क्योंकि राम और भाजपा को जोड़ देना बहुत आसान है। यह सुविधा मिल जाने के बाद आरोप-प्रत्यारोप आसमान छूने लगता है। बाद में छपे साक्षत्कारों के आधार पर यह साफ हो गया कि रामसेना का संघ परिवार वगैरह से कोई लेना देना नहीं है। और न भाजपा से। वे तो सांस्कृतिक आक्रमण के विरूद्ध लड़ रहे थे। भारत में यह सांस्कृतिक आक्रमण भारत के अंदर भी चल रहा है बाजार तंत्र के जरिए भी चल रहा है और भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों को प्रभावित करने के जरिए भी चल रहा है। और बात सिर्फ शराब की ही नहीं है। बात वेश-भूषा की भी है। भड़काऊ वस्त्र की भी है। उत्तेजक सिनेमाई दृश्यों की है। खानपान और भारतीय जीवन पद्धति के प्रति आस्था तोड़ने वाले सैकड़ों तौर-तरीकों की है।

एकतरफ से देखा जाए तो यह सभ्यतागत युद्ध है। अमेरिकी सभ्यता अपने समाज को जिस तरह तोड़-फोड़ लिया है, उसी रास्ते वह आदर्श बताते हुए सारे संसार को वह उस रास्ते ले जाने की कोशिश कर रहा है। परिवार टूटते जा रहे हैं। उसी टूटन की ओर हमे वो ले जा रहे हैं। अति भौतिकता, अति कामांधता, सब कुछ इसी का परिणाम है। ये युवक सच्चे मन से इसका विरोध कर रहे थे। शराब और पब कल्चर का किसी भी तरह विरोध हो, बाजार की सभी शक्तियां टूट पड़ती हैं। ध्यान देने की बात यह है कि मैंग्लोर की इस मारपीट के प्रसंग में कोई भी आदमी मरा नहीं। घायल नहीं हुआ। किसी भी छात्रा को खरोंच तक नहीं आई। इन लड़कों के निशाने पर छात्राएं तो थी ही नही। एक-दो छात्राएं आ गई जो लड़कों के बचाव में आ गई थी। ऐसी घटना को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की तूल देना, यह बताता है कि यह ताकतें कितनी व्यापक असर रखती हैं।

एक तो वैसे ही शराब लॉबी बहुत ताकतवर है। दूसरे यौनाचार के निषेधों से मुक्ति की ललक एक आयुवर्ग में होती बहुत बलवती है। फिर बाजार की शक्तियां उस पर भाजपा विरोध राजनीति की चाशनी, सब मिलाकर तिल का ताड़ बना देना। आए दिन मदिरापान और यौनाचार से जुड़े हुए हादसे होते रहते हैं। सब देखते हैं, जानते हैं उसके बाद भी न उसका कोई विरोध होता है और न कार्रवाई। ऐसे में इन युवकों ने कानून अपने हाथ में लिया उससे वह बात का बतंगड़ बन गया।